डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज राजनगर

बीए हिंदी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र तथा स्नातक प्रथम खंड वैकल्पिक या ऐच्छिक हिंदी/ सामान्य हिंदी

आदिकाल : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

युद्धों का सजीव चित्रण, कल्पना की अधिकता एवं राष्ट्रीयता का अभाव- आदिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति है। इस युग के साहित्य में राजाओं की वीरता को बहुत बढ़ा – चढ़ा कर चित्रित किया गया है। राजाओं की वीरता के चित्रण के क्रम में युद्धों का सजीव चित्रण किया गया है। राजाओं की वीरता की प्रशस्ति हेतु कल्पना का अधिक चित्रण किया गया है। अधिकांश आदिकालीन कवि राजा के आश्रयी कवि थे। युद्ध और प्रेम के रंगों में रंगी रचनाओं को वीरगाथा कहा गया, वीरगाथा काल हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रारंभिक काल है। यह काल भारतीय इतिहास में राजनीतिक उथल – पुथल का था। राजाओं में आपसी तालमेल नहीं था। चारों ओर युद्ध का वातावरण था। वीर पुरुषों का यशोगान तथा वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन इस काल की कविता का मुख्य विषय था।

आश्रयदाताओं की प्रशस्ति, रासोग्रंथ -लेखन की परंपरा, वीर – श्रृंगार – रस का चित्रण – आश्रयदाताओं की प्रशंसा बहुत बढ़ा – चढ़ा कर की गई है, उनकी प्रशंसा में रासो ग्रंथ लिखे गए हैं। आदिकालीन साहित्य में मुख्य रूप से वीर एवं श्रृंगार रस का चित्रण किया गया है।

प्रकृति – चित्रण एवं जनसंपर्क की कमी, ऐतिहासिकता का अभाव – आदिकालीन कवि मुख्यतः राजा के आश्रय और सान्निध्य में रहते थे। सामान्य जन – जीवन से उनका संपर्क बहुत कम होता था, उनके रासो ग्रंथ आदि साहित्य में जन – जीवन का चित्रण नहीं है। वीरगाथा साहित्य में ऐतिहासिकता का अभाव है। तथ्यों की तुलना में कल्पना का प्राधान्य है।

प्रबंध एवं मुक्तक काव्यों की रचना, डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग – आदिकालीन साहित्य में प्रबंध काव्य एवं मुक्तक काव्य दोनों प्रकार की रचनाएं प्राप्त होती हैं। डिंगल और पिंगल भाषाओं का प्रयोग हुआ है।

रचनाओं की प्रामाणिकता संदेहास्पद – आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जिन बारह रासो ग्रंथों के आधार पर इस युग को वीरगाथा काल नाम दिया है उन सभी ग्रंथों की प्रामाणिकता संदेहास्पद है।

काव्याकार – कल्प का सुंदर प्रयोग – दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, रोला, छप्पय, कुंडलिया आदि छंदों की सुंदर योजना हुई है।

आदिकालीन साहित्य में लोक भाषा एवं लोक परिवेश से प्रेरित लौकिक साहित्य की भी रचना है। जैसे – ढोला – मारू रा दूहा, खुसरो की पहेलियां आदि।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने बारह रचनाओं को आधार रूप में प्रस्तुत करते हुए इसका नाम 'वीरगाथाकाल' स्वीकार किया था। डॉ. ग्रियर्सन ने इस युग को 'चारण काल' मिश्रबन्धुओं ने 'प्रारंभिक काल' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ. रसाल ने आदिकाल, डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'संधिकाल' एवं 'चारण काल' राहुल सांकृत्यायन ने ' सिद्ध-सामंत-काल तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे ' वीरकाल' कहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने वीरगाथाओं की प्रवृत्ति को मुख्य माना और इसीलिए इस कालावधि विशेष को वीरगाथा काल नाम दिया। कालक्रम में अधिकांश वीरगाथाएँ अप्रमाणिक सिद्ध हो गईं। धीरे – धीरे जैनों और सिद्धों की धार्मिक और श्रृंगारिक रचनाएँ भी प्रकाश में आ गईं, इन कारणों से वीरगाथा काल नाम इस युग के लिए उपयुक्त नहीं रह गया।

पृथ्वीराज चौहान के सखा, सामंत और दरबारी कवि ' चंदवरदाई' वीरगाथाकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। विद्वानों का कहना है कि ये पृथ्वीराज चौहान के साथ वि. सं. 1207 में पैदा हुए थे। चंदवरदाई को षटभाषा, व्याकरण, काव्य व साहित्य आदि का वृहद ज्ञान था। ये सभी स्थानों पर राजा पृथ्वीराज चौहान के साथ रहते थे। जब शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज को बंदी बनाकर ले गया तो चंदवरदाई भी उनके साथ चल दिए। जाते हुए उन्होंने पृथ्वीराज रासो का रचना – कार्य अपने पुत्र जल्हण को सौंप दिया।

-'पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृप साथ।'

आदिकालीन दूसरे प्रमुख कवि हैं वीसलदेव रासो के रचयिता नरपति नाल्ह। जैन कवियों में स्वयंभू प्रमुख हैं। श्रृंगारिक साहित्य के प्रमुख कवि विद्यापति तथा अद्दहमान हैं। लौकिक साहित्य के प्रमुख कवि अमीर खुसरो हैं।